TEACHERS OF BIHAR
The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अक्टूबर 2024
अंक 2

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

यह किताब टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज, भागलपुर(टीम लीडर)

संकलनकर्ता

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

विधाता छंद

कहे गोविंद श्यामा से,
मिलूँगा मैं अकेले में।
कही राधा अनंता से,
पड़ूँगी ना झमेले में।
सदा से ही सखी वृंदा,
अजन्मा की दिवानी है।
नयन भींगे हृदय बिंधे,
अनादिह की कहानी है।
रची लीला कन्हैया ने,
इशारों से भुवन जागा।
सहारा है कनकधारा,
किरण से ही तमस भागा।
दुलारे हैं यशोदा के,
अपलक उसे निहारी हैं।

अधर पर बाँसुरी सोहे,
वही बाँके बिहारी हैं।
करूँगी प्रेम की बातें,
निकट मेरे चले आओ।
दिखाओ मोहनी सूरत,
किशोरी का प्रणय पाओ।
रचाई रास मधुवन में,
बजे बंसी कन्हैया की।
रहूँ उर में यशोदा के,
पखारूँ चरण मैया की।

एस. के. पूनम
प्रा. वि. बेलदारी टोला, फुलवारीशरीफ

सत्य के राही महात्मा गाँधी

भारत के महाकाश में ,
एक नक्षत्र-सा बिंबित हुआ।
सत्य अहिंसा का धीरव्रती वह,
भूमंडल पर प्रतिबिंबित हुआ।।
बचपन से ही सत्य, न्याय का,
भाव सदा अर्पित करता।
बाल्यकाल से ही नियम नीति का,
प्रभाव सदा उत्पन्न करता।।
पढ़ने में सामान्य यह बालक,
न कभी नकल किया करता था।
चोरी का कोई भाव न था,
वह अक्ल दिया करता था।।
होनहार इस बालक में,
थी सदा असीम गहराई।
न छुआछूत का भाव तनिक,
थी सब में समत्व लखाई ।।

विदेश जाते वक्त जो उसने,
अपनी माता को वचन दिया था।
प्राण प्रण से उस वचन की रक्षा,
आजीवन उसने किया था।।
दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन की यात्रा
वह कितनी थी दु:खदायी?
मन पर कितना बोझ पड़ा था,
वह समय थी पीड़ादायी।।
दृष्टि यहाँ से करवट ली,
भारत माता को आजाद कराऊँ।
आजाद देश का नागरिक बन,
स्वतंत्रता के दीप जलाऊँ।।
दक्षिण अफ्रीका से लौटा यह रत्न ,
बन बैठा था वह योगी।
भारत माता को आजाद कराने,
में जुट गया वह कर्मयोगी।।

जालियाँवाला बाग में निहत्थे,
कितने असंख्य कटे थे।
डायर की काली करतूतों से,
अपनी ही धरा पर वीर सपूत पटे थे।।
गाँधी जी को कितनी पीड़ा हुई,
इसे न कोई जान सका था।
मन ही मन अंग्रेज भगाने को,
वह निश्चय ही ठान चुका था।।
दांडी मार्च नमक आंदोलन का,
वह चर्चित अगुवाई किया था।
छोड़ी थी तब अमिट छाप,
जब वह अतुल संघर्ष किया था।।
स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत बन,
स्वतंत्रता के दीप वे बरसा गए।
बुझने न पाए एक दीप भी,
हमें उस ज्ञान से सरसा गए।।
सत्य पर अटल विश्वास उनका,
सत्य ही उनकी शक्ति थी।
सत्य सदा जीवन में प्रवाहित,
सत्य ही उनकी अभिव्यक्ति थी।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

गाँधी हुए उदास रे

हे मन ! गाँधी को ढूँढू रे,
नगरी-नगरी गाँव रे।
नहीं मिले वो मेरे बापू,
देख लिया सब ठाँव रे।
नयन थक गए,
वसन भी फट गए,
देख न पाई आस रे।
डगर-डगर और गली में देखा,
पाँव न दे अब साथ रे।
जो मन देखा अपना तो फिर
गाँधी मिले उदास रे।
लाख मैं पूछा बोले ना कुछ,
मन-ही-मन मन पछतात रे।
बोले मिल वो शास्त्रीजी से,
देश का देखो हाल रे।
दोनों जब धरती पर आए,
करने लगे विचार रे,
सत्य को रोता पाया जग में,
हिंसा का है राज रे,
गाँधी हुए उदास रे।

फटे वसन में हरिया रोये,
पेट गए पीठ ठाँव रे,
कहाँ गए हैं धनकुवेर सब,
गाँधी पूछे हाल रे।
राजनीति ने गाँधी बेचा,
बड़ी-बड़ी है दुकान रे,
शास्त्री ठिठके बोले बापू,
काहे खड़े उदास रे।
दिन दुपहर में, संध्या पल में,
या हो रात बिरात रे,
गाँधी की तस्वीर लगाकर,
बहुत बनावत बात रे।
कहते हैं शास्त्री नमन है बापू,
मत लो मोको साथ रे,
कैसे देखूँ हाल वतन का
गाँधी हुए उदास रे।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज कटिहार, बिहार

गाँधी- शास्त्री जयंती

हम भूल गये है शास्त्री
को, सिर्फ गाँधी याद
हमें आयें।
दोनों का यह
जन्मदिवस, आओ
श्रद्धा सुमन चढ़ायें।।
देश हित में दोनों का हीं,
अतुलनीय रहा
योगदान।
है उनके सद्कर्मों ने
बनाया, उनको आज
अमर महान।।
एक नेहरू के बाद
प्रधान, दूसरा राष्ट्रपिता
कहलाये।
दोनों ने हीं जनहित
खातिर, अपनी सारी
उम्र बिताये।।

गुसत्य अहिंसा और सेवा
भाव, दोनों के जीवन का
मूल।
इनके बताये मार्गों को हम,
जायें न अपनाना भूल।।
मन वचन और कर्म से, जो
उचित राह दिखलाये हैं।
जीवन के उच्च आदर्शों से,
जीने की कला सिखायें
हैं।।
पाठक इनके आदर्शों को,
अपने जीवन में
अपनाएगा।
लाकर अमल जीवन में हीं,
इन्हें श्रद्धा सुमन
चढाएगा।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

बापू जी

वीर बहादुर जन्मा देश में,
जीता था वह श्वेत वेश में।
सीधा सादा बिताते जीवन,
भूला नहीं करते अपनापन।
रंग रूप का भेद न उनमें,
प्यार वह बाँटा करते जग में।
२ अक्टूबर को जन्मे लाल,
ओज तेजस्वी उनके भाल।
रखा वह सारा जग का मान,
थे गाँधी के चौथी पत्नी की संतान।
शोहरत में लिपटी शौकत व शान,
पिता थे रियासत के एक दीवान।
ठहरे बंधुत्व में सबसे खास,
पिता थे उनके मोहन दास।
थी धर्मालीन माता उनकी अनुयायी,
नाम था जिनकी पुतलीबाई।
वर्ष १३ में व्याह रचाया,
साध्वी संस्कारी कस्तूरबा को अपनाया।
प्रारंभिक शिक्षा गाँव के धूल में पाकर,
उच्च शिक्षा विदेशों में जाकर।
देश विदेश में परचम लहराया,
अहिंसा परमो धर्म: को अपनाया।

जिस देश से की आजादी की शुरू लड़ाई,
मरणोपरांत सम्मान डाक टिकट वह पाई।
क्या अजब नाम का था दस्तूर,
बा का प्यारा मोनिया और कस्तूर।
इनके जन्में पुत्र चारों कृपाल,
देवदास, रामदास, मणिलाल और हरिलाल।
प्रथम पुत्र के मृत्यु शोक संताप सताई,
अपने पति से चार साल पूर्व मृत्यु को पाई।
एकता ही सर्वस्व शक्ति और साथ है जोड़ो,
किया नेतृत्व अनेक आंदोलन और भारत छोड़ो।
१९४२ को दिया एक हुंकार जो प्यारा,
की शुरुआत आंदोलन दी “करो या मरो” का नारा।
देश की आजादी सत्य अहिंसा सूत्र स्वीकारा,
राजवैद्य जीवनराम कालिदास “बापू” कहकर पुकारा।
थे सुभाष चन्द्र उनके प्रेम समर्पण की आदि,
१९४४ में सिंगापुर रेडियो से राष्ट्रपिता की दी उपाधि।
३० जनवरी १९४८ को वह खुद से हारा,
था जिसका नाथूराम गोडसे हत्यारा।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया, बिहार

गाँधीगिरी अपनाएँ

अहिंसा
की हो बात,
स्वतंत्रता
की मिले सौगात,
सादगी
जिसकी पहचान,
सत्य
जिसका कमान,
बापू
तुम हो महान।
सत्याग्रह
जिसकी शक्ति,
गाँधी
थे वो व्यक्ति,
निडरता
जिससे मिला न्याय,
ब्रह्मचर्य
तालु पर नियंत्रण पाए,
बापू
इसीलिए महान कहलाए।
धोती
जिसकी पहचान,
लाठी
शास्त्र समान,
कर्मठता
ब्रह्म का वरदान,
सरलता
जीवन को बनाए आसान,
बापू
तुम्हीं हो राष्ट्र का सम्मान।

आज का दौड़
भ्रष्टाचार,
मन का गौर
गलत विचार,
सत्य का नाश
बनी लाश,
माहौल का विनाश
बन गया दास,
फिर कैसे होगा विकास?
आ जाओ
फिर एक बार,
बदलेगी
दिशाएँ चार,
सत्य
पसारेगा पैर,
हिंसा
की अब तो खैर,
बापू
आ जाओ करने सैर।
सोच
मन की बदलें,
बोल
मीठे ही बोलें,
सद्भावना
दिल से जोड़ें,
अहिंसा
का दामन न छोड़ें,
गाँधीगिरी
से अब नाता जोड़ें।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

देश के सच्चे सपूत

देश में एक ऐसे लाल हुए,
जो देश के कर्णधार बने।
अपनी निष्ठा अपनी बुद्धि से,
वे यशस्वी सूत्रधार बने ।।
ऐसे सपूत लाल बहादुर का,
जीवन दुखों में बीता था।
पर अपने कर्त्तव्य बुद्धि से,
स्वदेश का दिल भी जीता था।।
अपने वसूलों से किसी कीमत पर,
समझौता उन्होंने नही किया।
कुछ छोड़ना पड़ा तो छोड़ दिया,
जग में यश और सम्मान के साथ जिया।।
उनके जीवन काल में केवल,
सुयश की ही भाषा थी।
वे जीवनपर्यंत अच्छे कर्म किए,
उनकी अंतिम भी यही अभिलाषा थी।।
रेल मंत्री भारत सरकार में बने,
यह उनके कद को बिंबित करता था।
जब रेल घटना घटी, पद त्याग दिया,
उनके व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता था।।
वे डेढ़ वर्ष तक प्रधानमंत्री रह,
देश को बहुत बड़ा इनाम दिया।
जय जवान जय किसान का नारा दे ,
सचमुच देश को बड़ा पैगाम दिया।।

उनके शासन काल में ही,
पाकिस्तान ने भारत पर धावा बोला था।
पर उस अन्यायी का कैसा हस्र हुआ,
यह उसके सैनिकों ने खूब झेला था।।
उनकी ईमानदारी और निष्ठा का
सब कद्र किया करते थे।
उनकी देशभक्ति और संदेशों से,
सब सबक लिया करते थे।।
वे केवल प्रधान मंत्री ही नहीं,
जन जन के भी सच्चे सेवक थे।
उनमें आत्मीयता थी इतनी भरी हुई ,
वे प्रेम के भी सच्चे अनुसेवक थे।।
जीवन जीने की कला थी उनमें,
पर झूठ का तनिक भी लेश नहीं।
भावना थी सदा देश हित में करने की,
दूसरों का हक छीनने में विश्वास नहीं।।
थे ऐसे भारत के महान विभूति वे,
जो हमेशा न्याय , धर्म का पक्ष लिया।
न अपनायी कभी अनीति, अधर्म ,
उन्होंने फैसला सदा निष्पक्ष किया।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

दोहावली

दो अक्टूबर जन्म है, दो पुरुषों के नाम।
गाँधी प्यारा एक है, दूजा लाल ललाम।।
गाँधी जी का जन्म है, प्रांत नाम गुजरात।
भाव एकता सूत्र का, दिया नवल अवदात।।
सत्य-अहिंसा मार्ग पर, कदम बढ़ाए आप।
स्वच्छ कर्म के भाव की, छोड़ी अपनी छाप।।
अभिनव चिंतनशीलता, थी बापू की शांति।
नैतिकता के भाव में, मिली उन्हें नव कांति।।
युग निर्माता संत थे, उनका हृदय विशाल।
सत्य शांति से देश का, चमक रहा है भाल।।
सत्य अहिंसा मूल से, निर्मित गाँधीवाद।
देश नहीं संसार में, रखते इनकी याद।।

प्रेम दया की भावना, अभिनव उच्च विचार।
गाँधी जी का मंत्र है, यही सफलता द्वार।।
गाँधीवादी भाव में, निहित ऐक्य संदेश।
यही भावना विश्व में, लाती नव परिवेश।।
लाल बहादुर ने दिया, नारा अद्भुत ज्ञान।
जय जवान से बल मिला, जय किसान सम्मान।।

देव कांत मिश्र

मध्य विद्यालय धवलपुरा
सुल्तानगंज, भागलपुर, बिहार

प्यारे थे गाँधी

सत्य अहिंसा के पुजारी थे गाँधी
सादगी में जीवन गुजारे थे गाँधी।
एक सूत्र में बाँध भारतवासी को,
स्वतंत्रता का संग्राम छेड़े थे गाँधी।
गुजरात राज्य के पोरबंदर नामक गाँव
२ अक्टूबर १८६९ को जन्म लिए गाँधी।
सत्य अहिंसा को हथियार बनाकर
अंग्रेजों से आज़ादी दिलाए गाँधी।
यात्रा कर, ७ जुन १८९३ की रात
शहर प्रिटोरिया जा रहे थे गाँधी।
अंग्रेजों द्वारा नस्ली भेद-भाव कर
ट्रेन से बाहर फेंक दिये गये थे गाँधी।

संघर्षों का रोड़ा आता रहा राह में
पर पथ से तनिक न भटके गाँधी।
मिला जो साथ ,भारतवासियों का,
लिखने नई दास्तां निकल पड़े गाँधी।
त्रस्त था बिहार, तीन कठिया प्रणाली से
शुक्ल के आह्वान को स्वीकार किये गाँधी।
परेशानी और बदहाली देख किसानों की
१९१७ में चंपारण सत्याग्रह किये गाँधी।

एम० एस० हुसैन
“कैमूरी”
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
छोटका कटरा
मोहनियां, कैमूर, बिहार

Way of life

The way of life
an anchor for youngsters
a road map to
truthfulness
an easy inspiration
Truthful mirror,
in this era of rampant
greed
widespread violence
runaway consumption
political anarchism
widespread disparities
religious fanaticism,
Seven decades later
that frail looking man
in easy blood and bone
is still an easy answer
because the greatness
of that man was his
simplicity
away from modern days
hassles and
complicity
but we have to try
and discover a bit
of Gandhi in
ourselves
and inculcate and
extend
his way of life all
around
to find people
around
the axis and globe
living peaceful and
sound.

Ashish Kumar Pathak

middle school
dharhara block of munger
district

गिरते दाँत और गाजर

नाना जी ने बोई गाजर
रोज सुबह पानी देते आकर।
राजू नाना से पूछा जाकर
नानू यह गाजर कब तक आएगा?
मेरा प्यारा कल्लू खरहा कब इसे खाएगा?
नाना जी बोले बड़े प्यार से
नाती! तुम्हारा दाँत जब गिर जाएगा,
कल्लू खरहा तब इसे खाएगा।
लेकिन नानू मेरे दाँत जब गिर जाएँगे
फिर मैं गाजर कैसे खा पाऊँगा ?
जब नए मजबूत दाँत तुम्हारे आएँगे
फिर तुम भी कल्लू खरहे की तरह
गाजर कुतर- कुतर कर खाओगे
लेकिन नानू आपके दाँत गिर पड़े हैं
आप कैसे खा पाएँगे ?
खेतों से खर निकालती नानी बोली
मैं बनाऊँगी गाजर का हलवा
फिर हम सब छक कर खाएँगे।
राजू प्रसन्न होकर बोला-
मेरा कल्लू खरहा भी खाएगा गाजर का हलवा
फिर हम सब मिलकर ताली बजाएँगे।

अवनीश कुमार

व्याख्याता
बिहार शिक्षा सेवा

पापा हमारे कितने प्यारे

ऐसे हमारे पापा प्यारे
पापा पापा कितने प्यारे,
हम बच्चों के कितने न्यारे।
हमें समझाते कितने अच्छे,
बातें करते कितने सच्चे।
उनके बिना न लगता मन,
बिना उनके न खिलता तन।
उनके बिना घर लगता नहीं अच्छा,
बिना उनके घर लगता नहीं सच्चा।
पापा हम सबका दिल बहलाते,
हैं पापा से घर सज जाते।
ऐसे हमारे पापा प्यारे,
अन्य संबंधों से है अति न्यारे।
जब हम कुछ गलती कर जाते,
बड़े प्रेम से हमें समझाते।
मुश्किल में जब हम पड़ जाते,
बड़े प्यार से हमें उबारते।
वे जीवन के संगीत हमारे ,
हम सबको अति लगते प्यारे ।
वे जीवन के सुर ताल हमारे,
हमारे जीवन के अनमोल सितारे ।

गलत राह से हमें बचाते,
सही बात हमें रोज बताते।
जब पापा सुबह ऑफिस जाते,
घर आँगन सब सूनी हो जाते।
जब शाम को पापा घर आते हैं,
हम सबके लिए नई नई चीजें लाते हैं।
हम मगन हों उनमें खो जाते हैं,
हम सबके दिल खुश हो जाते हैं।
दादा- दादी के प्यारे हैं वे,
उनके राज दुलारे हैं वे।
दादा दादी के नित्य पैर दबाते,
इससे दादा-दादी खुश हो जाते।
वे अपने पापा का कहना सदा मानते,
उनका दिल खुश रखना वे खूब जानते।
हम भी पापा की बातों को कभी न काटेंगे,
उनकी हर बातों को सदा सदा ही मानेंगे।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

बाजा की आवाज

बाजा की आवाज आ रही है
माँ मन को लुभा रही है।
बाहर मुझको जाने दो न
कारण देखकर आने दो न
कहकर प्रमा मुस्का रही है
माँ को अपनी मना रही है।
देख बेचैनी माँ मुँह खोली
हँसकर बड़े लाड़ से बोली
दशहरा आने वाला है
मेला भी लगने वाला है।
माँ दुर्गा की पूजा होगी
रावण की भी पुतला जलेगी
बिक रहे खिलौने और मिठाई हैं
डिजनीलैंड और सर्कस भी
आई है

मिल-जुल कर मौज करेंगे
पर पहले स्नान करना है
नया वस्त्र तुझे पहनना है।
अब प्रमा बोली खुश होकर
जल्दी से तैयार मुझे कर
राम लीला भी होने वाली है
देखो बजाते सब ताली है।
मेला घूमने सब जाएँगे
खूब मजे से हम खाएँगे
माँ का वंदन करना है
और मुझे खुश रहना है।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

गिलहरी

विद्यालय के प्रांगण में,
है झूलती आम की डाली।
उससे अक्सर आती जाती,
कतिपय गिलहरियाँ मतवाली।।
बच्चों की किलकारी सुनकर,
फूर्र-फूर्र फूर्रर हो जातीं।
बच्चे उनकी ओर भी आते,
चूँ चूँ करतीं वह चिल्लातीं।।
उन्हें भागतीं देखकर
बच्चे हो जाते निहाल।
सुंदर-सुंदर बोली उनकी,
सुंदर-सुंदर मृदुल बाल।।
बच्चे के संग वो खेलती,
करती आँख मिचौली।
स्नेहिल भाव उमड़ते ऐसे,
जैसे पुराने हम जोली।।
गुल्लू ने ऐसा सोंचकर,
लगा उन्हें फुसलाने।
मूंगफली मेवा मिश्री से,
लगा उन्हें ललचाने।।
इतने मेवा मिश्री पाकर भी,
नहीं लालच में वो आई।
तब विवश होकर गुल्लू ने,
उस पेड़ पर की चढ़ाई।।
डाली पर चढ़कर उसने,
उसको किया इशारा।
हाथ से जब छूटी डाली,
नीचे गिरा बेचारा।।
नीचे गिरा बेचारा,
जोर से वह चिल्लाया।
आस-पास के बच्चे,
दौड़कर उसे उठाया।
उसे पता क्या था
फट गया उसका सर है।
तेजी से घर तक जा पहुँची
हाय! ये तो बुरी खबर है।
भागा आनन- फानन में,
और पहुँच गया अस्पताल।
तब जाकर इस घटना की,
घर वालों ने की जाँच- पड़ताल।।
बच्चे भावुकता में तुम,
इतना भी मत खो जाना।
जिस डाल पर खुद बैठे हो,
उसको न काट गिरा जाना।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रधानाध्यापक, मध्य विद्यालय दरबेभदौर

परिश्रम

अगर चाह हो कुछ करने की,
करें नित्य श्रम का सम्मान।
श्रम के आगे झुकते सारे,
पूरे होते लक्ष्य महान।।
एकलव्य के श्रम को देखें,
वीर धनुर्धर हुआ महान।
मल्लाहों का नाम बढ़ाया,
पूर्ण किया अपना अरमान।।
दशरथ माँझी का श्रम जानें,
रचा शक्ति का नवल वितान।

धीर-भाव के श्रम-सीकर से,
लाया जीवन शुभ्र विहान।।
श्रम को प्रतिदिन सरस बनाएँ,
कार्य तभी होगा अभिराम।
लक्ष्य-पूर्ति होने तक किंचित्
इसे कभी मत दें विश्राम।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा सुलतानगंज,
भागलपुर, बिहार

निपुण बनें हम

हे प्रभु! हम बालक बड़े नादान,
आप हमें दें यह वरदान।
जल्दी निपुण, बन जायें हम,
भारत के निपुण बालक
कहलायें हम।
पढ़ने- लिखने में हों बालक
अच्छे,
भाषा-गणित में हो जायें पक्के।
हम अपनी धुन में हों जायें
सच्चे,
हे अल्लाह ! आप हमें दें यह
वरदान।
हम सब बालक बड़े नादान।
गुरुजन का सदा कहना हम
मानें,
निपुण बनना जीवन का लक्ष्य
हों, हम जानें।
पढ़-लिख कर हम सब बनें
महान।
सुशिक्षित भारत के नौनिहाल
बनें,
हे सद्गुरु ! आप हमें दें यह
वरदान।

हम सब बालक बड़े नादान।
पढ़ना-लिखना जब सीख जाएँगे,
प्रवीण विद्यार्थी हम कहलाएँगे।
हों जाएँगे भारत के निपुण बच्चे,
अपनी धुन के हैं हम पक्के-
सच्चे।
हे भगवान ! आप हमें दें यह
वरदान।
हम सब बालक बड़े नादान।
पढ़-लिखकर हम पाएँ ज्ञान,
निपुण बनकर बढ़ायें भारत का
मान,
हे प्रभु! आप हमें दें यह वरदान।
हम बढ़ायें भारत का मान,
हमसे चमके भारत का नाम।।

अवनीश कुमार
व्याख्याता (बिहार शिक्षा सेवा)
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर,
बेगुसराय

कर्म-पथ

जिस पथ में चला सदा सत्य है यह कर्म-पथ
उतार तो कहीं चढ़ाव का है ये जीवन सु-पथ।
जीवन के हर मोड़ पर जिनको भी देखा सदा
वो पूरा भी न कर सके इसका कुछ मोल अदा।
वो कहते थे, सदा चल चलूँगा इस मार्ग-पथ
पर भूल गए क्यूँ जीवन तो है ही अग्नि-पथ।
तोहमत दे दी तो क्या मैं जीवन छोड़ जाऊँ
मोहलत है जीवन सफल में कुछ जोड़ पाऊँ।
पूरा सफर है अभी इस ज़िन्दगी का अधूरा
इसे करना ही होगा अब हर हाल में पूरा।

एक तेरा साथ मिले तो जीवन है पूर्ण-पथ
बाकी जीवन जीने का नाम ही है धर्म-पथ।
कहीं कंटक भी मार्ग में बन जाता है बाधक
कठिनाइयों में भी मार्ग बन जाता है साधक।
साथ-साथ चलें, हाथ बाँट चलें इस कर्म-पथ
बाकी जीवन कर्म को पूरा करेगा यह सु-पथ।
जिस पथ में चला सदा सत्य है ये कर्म-पथ
उतार तो कहीं चढ़ाव का है ये जीवन सु-पथ।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

माता की भक्ति

माता का पंडाल सजा है,
भक्तों की कतार लगी है।
आएँ भक्तों लगाएँ ध्यान,
कर लें भक्ति मिलेगा मान।
नवरात्रि में माँ की पूजा,
मन से नित करिए आप।
माँ का आशीर्वाद मिलेगा,
धुल जाएँगें सारे पाप।
शक्ति स्वरूपा है माता जी
है बहुत इसका प्रमाण।
करूँ जो पूजा सच्चे मन से
हृदय से करूँ प्रणाम।।

दीन-दुखियों पर दया दिखाती,
करे जो माँ का, मन से पुकार,
अमीर-गरीब या हो धनवान।
माता के नजर में एक समान।।
अत्याचारी और अधर्मी,
महिषासुर का किए संहार।
गलत का अंत करने यहाँ पर,
माता जी लिए अवतार।
आओ पाएँ आशीष माता की,
विघ्न-बाधा और कष्ट मिटे।
सफल-सुफल हो सबका जीवन
माता सबका सुमंगल करे।

भवानंद सिंह
प्मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

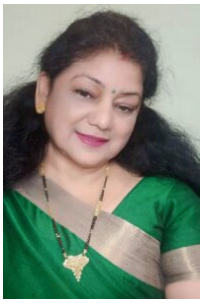

माँ कात्यायनी

ऋषि कात्यायन की हे सुता,
यह दर्प तुम्हारा अद्भुत है।
यह रूप तुम्हारा अद्भुत है,
सौंदर्य तुम्हारा अद्भुत है।
ज्योति द्युति प्रकृति अद्भुत,
अनुराग तुम्हारा अद्भुत है।
महिषासुर मर्दनी तू माते,
प्रताप तुम्हारा अद्भुत है।
तू मोक्षदायिनी जग जननी,
माँ प्यार तुम्हारा अद्भुत है।

सहज ही तू झोली भर दे,
दरबार तुम्हारा अद्भुत है।
भक्त- युक्ति शक्ति के संग,
यह साथ तुम्हारा अद्भुत है।
प्रणाम मेरा स्वीकार करो,
माँ नाद तुम्हारा अद्भुत है।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार, बिहार

मेरे नाना

मेरे नाना प्यारे नाना
आपके घर, मेरा आना-जाना।
जब भी हम जाते, हमें बुलाते,
अपने पास वो हमें बिठाते।
कुछ -न -कुछ नित हमें सिखाते,
दो लाईन हमसे पढ़वाते।।
कभी हमसे उँगली फोड़वाते,
कभी पेट में गुदगुदी लगाते।
कभी जोर से खुद वो हँसते,
फिर हम सबको वो खूब हँसाते।
मेरे नाना प्यारे नाना
हम सबके थे दुलारे नाना।
नानी को वो देख- देख कर,
गाते रहते थे वो गाना।।
कभी ढोलक पर कभी तबला पर,
कभी हाथ में माईक लेकर,
मधुर स्वर में गाते थे गाना।
मेरे अच्छे प्यारे नाना।

नाना जी के चश्मा काले
पहनते तो लगते बड़े निराले।
लंबे थे अमिताभ से थोड़े छोटे
लेकिन थे वो बड़े दिलवाले।।
जब कभी नाना बाहर जाते
फोन से हम सबसे बतियाते।
जब नाना फिर वापस आते,
पूरे घर में खुशियाँ छा जाते।।
मेरे नाना प्यारे नाना,
हम सबके थे दुलारे नाना।
जिस दिन छोड़ गए हम सबको,
छोड़ दिए उनके घर आना- जाना

नीतू रानी'
म. वि. सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ, बिहार।र

नौ रूपों में दुर्गा माता

नौ रूपों में दुर्गा माता की पूजा,
परम पावन दुर्गा पूजा कहलाती है।
नौ दिनों के निरंतर तपश्चरण से,
हृदय में अपार श्रद्धा उमड़ आती है ।।
प्रथम पूजा होती माता शैलपुत्री की,
जो पुत्री हैं हिमालय पर्वतराज की।
भक्त श्रद्धा से सदा भजन करते,
मैया के हर रूप मनोहर राज की।।
द्वितीय रूप में माता का पूजन होता,
ब्रह्मचारिणी सत्य सनातन रूप में।
हैं माता तप का आचरण करनेवाली,
भक्त करते भजन उस स्वरूप में।।

तृतीय रूप में माता की पूजा होती ,
चंद्रघंटा के मनमोहक रूप में।
वे प्रिय भक्तों की झोली भरती हैं ,
नानाविध ज्ञान-विज्ञान स्वरूप में।
चतुर्थ रूप में माता कुष्मांडा का पूजन होता,
जिन्होंने मंद मुस्कान से ब्रह्मांड उत्पन्न किया।
तिमिर त्रैलोक्य का हरण कर माता ने,
अपने प्रिय भक्तों को अति प्रसन्न किया।।
पंचम रूप स्कंदमाता का,
होता पूजन विधि-विधान से।
भक्तों पर सदा कृपा बरसती है,
मैया की कृपा संधान से।

सषष्टम रूप में दुर्गा पूजन होता ,
कात्यायनी माता के रूप में।
दनुज महिषासुर का अरिमर्दन कर,
मैया बन गईं महाशक्ति स्वरूप में।
सप्तम रूप में माता दुर्गा की पूजा ,
कालरात्रि माँ के रूप में होती है।
इनका रूप अति भयंकर होता,
पर अंतर्मन से शुभ फल देती हैं।
अष्टम रूप में महागौरी का पूजन कर,
प्रिय भक्तगण धन्य-धन्य हो जाते हैं।
अपने हृदय में इन्हें धारण सुमिरन कर,
भक्त माता के चरणों में खो जाते हैं।।
नवम रूप में माता दुर्गा की पूजा,
होती है सिद्धिदात्री के रूप में।
अपने भक्तों की झोली भरती माँ,
अनिमा, महिमा, गरिमा प्रतिरूप में।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

जीवन के रास्ते

अँधेरी रात के बाद आती उम्मीदों भरी सुबह,
हर हाल में जीवन के तू सदा मुस्कुराता रह,
वक़्त का पहिया अनवरत घूमता रहता है,
किंतु-परंतु छोड़ अपनी बातों को तू कह।
काँटों के संग फूलों का रहता बसेरा है,
निराशा की घनी रात बीच आशा का सवेरा है,
पतझड़ ही सिखाते हैं नई कोपलों को खिलना,
बाधाओं ने ही सफलता को सदा घेरा है।
जिंदगी के अनुभव नया सबक सिखाती है,
हौसले हों तभी हमें जिंदगी भी रास आती है,
गिरकर ही सँभलने का हुनर सीख पाते हैं,
नफरत ही प्रेम की महत्ता हमें बतलाती है।
मित्र और शत्रु दोनों ही जीवन में मिलते हैं,
कीचड़ में ही खूबसूरत कमल खिलते हैं,
सोच में अगर सकारात्मकता और सच्चाई हो,
हिम्मत ही हमारे हर ज़ख्म को सिलते हैं।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

कालरात्रि माँ

माँ कालरात्रि
संकट दूर करो
देवी त्रिनेत्री।
रोग नाशिनी,
दया करो माँ दुर्गे
जग तारिणी।
जय चामुंडा,
साहस भर देती
जग कल्याणी।
अष्टभुजी माँ,
चंड मुंड विनाशिनी
आदि भवानी।

मद मर्दिनी,
विपदा हरो देवी
पाप नाशिनी।
हे आदि शक्ति,
बुद्धि प्रदायिनी माँ
करते भक्ति।
मुंड मालिनी,
संकट दूर करो
वरदायिनी।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

विधाता छंद

चरण छूलूँ भवानी माँ,
पनाहों में मुझे पाओ।
महादेवी जगतजननी,
मुझे तो छोड़ मत जाओ।
सदा तुम कष्ट ही हरती,
तुम्हारे पास जो जाता।
मिटेगा पाप उसका भी,
दया कर दान दे आता।
सदा ही भावना मेरी,
सुमन से ही सजाऊँ मैं।
कहाँ तुम हो दरस दे माँ,
विकल होकर पुकारूँ मैं।

शिवा तू ही महागौरी,
महाकाली महामाया।
तपस्या में रहीं डूबी,
त्रिलोकी का बनी साया।
मिले आशीष तेरा जो,
हृदय में प्रीत बढ़ जाता।
सदा मन से भजन करता,
दुखों से पार मैं पाता।
दया कर दो शिवानी माँ,
तुम्हारा ही रहूँ प्यारा।
श्रद्धा वंदन करूँ माते !
सुनोगी नित्य जयकारा।

एस. के. पूनम

प्राथमिक विद्यालय बेलदारी टोला, फुलवारीशरीफ

मातु भवानी सुन

ममतामयी मातु भवानी सुन,
आद्या जननी तू सद्गति दे।
इहलोक में जगदम्बा सुन ले,
भवप्रीता मुझे शरणागति दे।
ममतामयी मातु भवानी सुन।
मैं मूढ़मति तू सुन आर्या,
हे महातपा मुझे सन्मति दे।
मेरे जीवन में सती गति दे,
मम कष्ट हरण भव्या कर दे।
ममतामयी मातु भवानी सुन।
हे चित्रा हिय अब आन बसो,
तन -मन निर्मल सुंदरी कर दे।
प्रणाम कोटिशः त्रिनेत्रा,
चित्तरूपा तू सत्चित् अब कर दे।

ममतामयी मातु भवानी सुन .
नमन हे साध्वी जया तुम्हें,
हे शिवा अहर्निश तप कर ले।
माया तेरी भाविनी अद्भुत,
हे मातंगी मुझको तप दे।
ममतामयी मातु भवानी सुन..
हे रत्नप्रिया विनती सुन ले,
मन पाप मुक्त आद्या कर दे।
मैं अज्ञानी खल कामी चिन्ते,
हे सर्वप्रिया तम अब हर ले।
ममतामयी मातु भवानी सुन

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज , कटिहार

हरिगीतिका

नवरात्रि में माँ अन्नपूर्णा,
रोहिणी कहलाइए।
तू सात्त्विकी कल्याणकारी,
चंडिका बन आइए।।
काली त्रिमूर्ति महेश्वरी भव,
भद्रकाली नाम हैं।
आराधना करते सभी तो,
लोग जाते धाम हैं।।
संहार दैत्यों के लिए तो,
शस्त्र ले ली हाथ में।
कर में त्रिशूल सुशोभता है,
धर्म तेरे साथ में।।

गंधर्व दानव देव भी तो,
आज विनती कर रहे।
गौरी महारानी तुम्हारे,
प्रेम रस हिय भर रहे।।
लाल चुनरी पहन तू माता,
लाल सबको कर रही।
डमरु लिए बसहा सवारी,
शुभ सुहागिन तर रही।।
दुख हारिणी तू ही सभी के,
दुखहरण कर लीजिए।
नवरूप की पूजा करें जो,
धन्य तू कर दीजिए।।

रामपाल प्रसाद सिंह
मध्य विद्यालय दरवेभदौर, पंडारक, पटना

देवी माँ

देवी माँ के असली रूप को
भला कौन है जान पाया,
जैसा जिसका भाव माँ ने
उसको वैसा रूप दिखाया।
जिस किसी ने भी मातारानी को
जिस भाव से है ध्याया,
माँ भवानी ने उसके लिए,
उसी रूप को अपनाया।
उनके यथार्थ स्वरूप को
कोई पहचान ना पाया,
सम्पूर्ण ब्रह्मांड उनके ही
मुखाकृति में है समाया।
कभी तो भगवती ने कमल को
अपना आसन बनाया,
कभी अँगूठे से दबाकर जग में
हड़कंप मचाया।
जिसने भी नतमस्तक होकर
जगत जननी को बुलाया,
जगत जननी ने उसे अपना
सौम्य रूप दिखाया।

जब किसी ने अबोध बालक बन
मैय्या-मैय्या बुलाया,
तो मैय्या ने ममता रूपी आँचल
में
उसे छुपाया।
लेकिन जिसने आसुरी प्रवृति धर
माता से टकराया,
तो मैय्या ने रौद्र रूप धर उसे
यमलोक पहुँचाया।
कभी कल्पवृक्ष बन माँ ने,
हम पर पीयूष बरसाया।
तो कभी बज्र से भी कठोर बन
नीच को मजा चखाया।
कभी तो मात ने फूलों से भी
कोमल रूप बनाया,
और कभी काली रूप धर
पूरे विश्व को थर्राया।
देवी माँ के असली रूप को
भला कौन जान पाया,
जैसा जिसका भाव माँ ने
वैसा रूप उसे दिखाया।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, मुंगेर

मेरे राम

राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम राग, राम त्याग, राम तो अनंत है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
ज्ञान और विज्ञान राम, राम जीवन धर्म है।
राम नाम लोकधर्म, परम् धाम मर्म है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
विरथ राम रणवीर, रथी रावण अंत है।
राम शील राम वीर, राम राम कंत है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
जीवन के प्रकाश राम , तोम अंत राम है।
संस्कृति के सम्पूज्य राम, संत वास राम है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम है सिया का राम, सिया का राग राम है।
राम राजधर्म ज्ञान, शक्ति धर्म राम है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम संकल्पशक्ति ध्यान, धैर्ययुक्ति राम है।
राम पराक्रम प्रकाश, विजयी गान राम है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम नाम चेतना है, अध्यात्म का प्रकाश है।
राम नाम में समाया , ब्रह्म का प्रकाश है।

राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम है संस्कार नाम, मर्यादा के राग हैं।
राम गुणगान करते, शिव हैं संत साथ हैं।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम है सुनाम नाम, अमोघ अस्त्र राम है।
राम लोकपर्व नाम, परम् धाम राम है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।
राम राग है विराग, मर्यादा नाम राम है।
राम जैव धर्म नाम, जीवन-लक्ष्य राम है।
राम जप है, राम तप है, राम आदि अंत है।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज , कटिहार

मम्मी दुनिया से निराली है

दुनिया चाहे कुछ भी कह ले
मम्मी ही हमारी जान है।
हर सुख-दुःख में साथ वह देती ,
मम्मी ही हमारी पहचान है।।
मम्मी की बात मीठी होती,
लगती हमें बड़ी प्यारी है।
वह तो इस घर की है रानी,
लगती सबसे न्यारी है।।
भोर होते ही सब दिन,
सबसे पहले जग जाती है।
अपने काम करने में वह ,
तनिक भी न घबराती है।।
मम्मी नित्य हमें तो ही,
दूध, मलाई खिलाई है।

पग-पग चलना भी हमें,
मम्मी ने ही सिखलाई है।।
सदा ख्याल करती हम सबका,
वह दुनिया से बड़ी निराली है।
वह मीत है हमारे जीवन का,
वह घर की भी खुशियाली है।।
हम सबको प्यार भी ,
मम्मी से सदा मिलती है।
उसके घर से बाहर रहने पर,
घर की सूरत बिगड़ती है।।
पापा, दादा, दादी के भी,
देखभाल करने पड़ते हैं।
दवा, खानपान, संयम के भी,
उसे ही ख्याल रखने पड़ते हैं।।

ऑफिस जाते पापा की ,
उसको तैयारी करनी पड़ती है।
लंच बॉक्स में टिफिन दे ,
घर के काम में लगनी पड़ती है।।
मम्मी से कहता, दो रोटी दो,
वह सदा थाली में चार रख जाती है।
पूछने पर बड़े प्यार से ,
केवल दो ही तो बतलाती है।।
रोटी की गिनती में वह ,
सदा मात खा जाती है ।
इससे इतर गिनती में,
अपना लोहा भी मनवाती है ।।
रोज बिस्तर पर ले जाकर,
मीठी लोरी हमें सुनाती है।
हम सबका दिल खुश कर मम्मी,
रात में थपकी दे सुलाती है ।।
ऐसी मम्मी मिली है हमें,
जो जीवन का सुख देती है।
अपने सुख को छोड़ सदा,
हम सबका दुःख हर लेती है।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड -बंदरा , जिला- मुजफ्फरपुर

चिड़िया रानी

चूँ चूँ करती चिड़िया आती
दाना-पानी कहाँ से लाती।
क्या खाती और क्या वह पीती,
बोलो बोलो कैसे वह जीती।।
खेतों में, खलिहानों में,
हरे-भरे मैदानों में,
घर के आँगन, मुँडेरो पर,
दाना चुगती चिड़िया रानी।
नदी, तालाब, पोखरें या फिर
जो दिख जाएँ, पीती पानी।।

चूँ चूँ करती चिड़िया रानी
कहाँ है उसका रैन बसेरा।
कहाँ बिताती है वो रातें,
कहाँ होता है उसका सवेरा।।
घरों में या बागानों में,
खिड़की और दरवाजों पर।
छतों और मुँडेरों पर
या फिर पेड़ की शाखाओं पर।
बनाती है वह रैन बसेरा।
वहीं बिताती है अक्सर वो,
रात या फिर अपना सवेरा।।
तिनका-तिनका जोड़ तृण का,
घोंसला वह बनाती है।
बड़ी मेहनत से सजा-सँवारकर,
उसमें खुद को बचाती है।।
उड़ती है वह उन्मुक्त गगन,
हो अपनी ही धुन में मगन।
ऐसी है आती चिड़िया रानी।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

देखो सानवी आई है

देखो सानवी आयी है।

संग सहेलियाँ लायी है।।

रंग दो माँ पाँव सभी का,

लगे मनोहर भाव सभी का,

प्रमा कहती हर्षायी है।

देखो सानवी आयी है।।

संग मुझे भी चुनरी दो,

बना मुझे भी सुन्दरी दो,

दादी गीत भी गायी है।

देखो सानवी आयी है।।

सबको मिली खाने का थाल,

माथे पर दी चुनरी डाल,

माँ दुर्गा हमें बनायी है।

देखो सानवी आयी है।।

खाने पर सबको दी पैसा,

माँ बताओ रिवाज यह कैसा?

सुनकर माँ मुस्कायी है।

देखो सानवी आयी है।।

देखो सानवी आयी है।।

नवरात्रि का व्रत जो रखते,

माँ दुर्गा का पाठ जो करते,

आज हवन करायी है।

देखो सानवी आयी है।।

कुमारी की जब पूजा करते,

नवदुर्गा प्रसन्न तब होते,

मेरी माँ मुझको यही बतायी है।

देखो सानवी आयी है।।

क्या नानी भी ऐसा हैं करती,

बिना खाए दिन-रात है रहती,

प्रमा समझ अब पायी है।

देखो सानवी आयी है।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

कहतीं रहीं अम्मा

तुम हाथ साफ रखना, यह
कहतीं रहीं अम्मा,
स्नान- ध्यान करना,
कहतीं रहीं अम्मा।
अब आ गया जमाना हम
भूल गए थे,
वो सब बड़ी शिद्दत से,
कहतीं रहीं अम्मा।

साफ-सफाई का ध्यान
रखने को तब भी,
हमें रोज सुबह-शाम यह
रटतीं रहीं अम्मा।
कोई रोग नहीं आये, जो
साबुन से धोया हाथ,
जिस हाथ को थीं साफ,
करतीं रहीं अम्मा।

स्नान, सैनिटाइजर की
अद्भुत कथा सुन,
बाहर से आया घर तो कहतीं
रहीं अम्मा।
संस्कार समझता जो अपने
से हमेशा,
किसी रोग की मजाल क्या,
कहतीं रहीं अम्मा।

रहे साफ-साफ हाथ रहे
साफ अंग सब,
कई तरह से यह बात कहतीं
रहीं अम्मा।
घर साफ रहा आँगन भी
साफ हमेशा,
दिल साफ रख जज़्बात ये,
कहतीं रहीं अम्मा।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज , कटिहार

सत्प्रवृत्ति के सोपान

कर्त्तव्य हमारे ऐसे हों नित ,
जहाँ मन की मलिनता न छाए।
सदुपयोग, अधिकार का ऐसे करें ,
जहाँ अहंकार तनिक भी न आए।
परहित धर्म कभी न छोड़ें ,
निज कर्त्तव्य से मुख न मोड़ें।
सच्ची उन्नति तभी होती है,
जब दिल में सद्भाव भरी होती है।
जीवन जीने का मकसद समझें,
व्यर्थ की बात में कभी न उलझें।
हर बच्चे को यह ज्ञान कराएँ,
अपना दायित्व वे खूब निभाएँ।
चरित्र हमारा ऐसा हो पाए,
जो औरों क अनुकरणीय बन जाए।।।

लोभ, मोह से दूर रहें हम ,
झूठ, क्रोध को दूर करें हम।
याद रखें यह बात हमेशा,
मन में तब न रहे क्लेशा।
लोभी कभी न यश पाता है ,
क्रोधी हमेशा मित्र खोता है।
आचरण के धनी जरूर बनें हम,
जीवन में यह चरितार्थ करें हम।
कभी शब्द बाण ऐसे न चलाएँ,
जिससे किसी का दिल आहत हो जाए।
मन की मलिनता दूर करें हम,
सज्जनता को अंगीकार करें सब।
हम सत्य मार्ग को चुनें हमेशा,
तभी बनी रहेगी शांति हमेशा।

अपने लिए तो सब जीते हैं,
पर के लिए भी जीना सीखें।
इससे ही सद्भाव बढ़ेंगे,
इससे ही कर्त्तव्य बनेंगे।
अपने लिए जो सोच धरेंगे ,
दूसरे के लिए भी वही करेंगे।
ऐसा करने से सद्भाव बढ़ेगा,
अहम् पाप का दोष मिटेगा।
हर बच्चे में कर्त्तव्य जगाएँ,
जीवन उनका सफल कर जाएँ।
जीवन को खुशियों से हम तभी भरेंगे,
जब कर्त्तव्य मार्ग से सभी जुड़ेंगे।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला-मुजफ्फरपुर

दोहावली

अपने मन की कीजिए, रखकर मन में चाव।
औरों की वो मानिए, जो हो सही सुझाव।।
सत्य वचन हीं बोलिए, रखकर मधुर जुबान।
वैसा सत्य न बोलिए, जो करे परेशान।।
हर्षित मन रखिए सदा, सुख दुख दोनों साथ।
सद्कर्म में लीन हों, फल देंगे रघुनाथ।।
मात-पिता गुरु को सदा, करिए प्रात प्रणाम।
जब भी शुभ अवसर मिले, करिए नवीन काम।।
देह वसन परिवेश भी, रखिए सुथरा साफ।
अगर किसी से भूल हो, करिए उसको माफ।।
तन के सँग मन का सदा, रहें मिटाते दाग।
रखकर भाव समत्व का, करें ईश अनुराग।।

पर अवगुण ढूंढत फिरत, निज गुण रहे निहार।
देख भेद हस्ती करत, यह सब अधम विचार।।
पीछे में शिकवा करे, पर सन्मुख गुणगान।
उस आस्तीन सर्प का, करें जल्द पहचान।।
वधू सुता के सम रहे, दोनों घर के मान।
अगर हों भेद-भाव तो, यश धन होती हान।।
जीवन को संतृप्त कर, रखिए शुचिता ज्ञान।
दूजे को मत कष्ट दें, रखिए इतना ध्यान।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

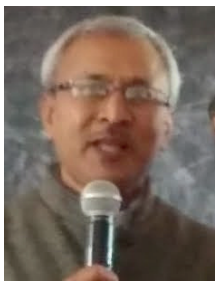

मनहरण घनाक्षरी

दिन भर काम करे,
कभी न आराम करे,
अकेली सुबह शाम,
भोजन बनाती हो।
हमें विद्यालय भेज,
कपड़े बर्तन धोती,
काम से फुर्सत नहीं,
खाना कब खाती हो?
जब नहीं नींद आती,
हमको सुनाती लोरी,
रातों को तू कब सोती,
कब जाग जाती हो?
बताओ हमारी अम्मा,
सबसे दुलारी अम्मा,
इतना अकेले काम,
कैसे कर पाती हो?

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म. वि. बख्तियारपुर, पटना

शरद पूर्णिमा

शरद
पूर्णिमा का
सोलह कलाओं से
परिपूर्ण होता
चाँद।

दूधिया
रोशनी बिखेरता
प्रेम चाँदनी संग
दिलोंजान से
करता।

घटता
बढ़ता चाँद
वक़्त परिवर्तन की
सुंदर कहानी
कहता।

शीतलता
चाँद की
शरद पूर्णिमा में
मन शीतल
करता।

चाँदनी
रोगमुक्त करती
अमृत वर्षा कर
खुशियाँ फिर
बरसती।

खूबसूरत
हुई रातरानी
चाँदनी में नहाकर
काया निर्मल
होती।

स्वागत
शीत का
उमस को अलविदा
शरद पूर्णिमा
करती।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ,
गुठनी, सीवान, बिहार

मेरे दोस्त

ये कैसे दोस्त हैं मेरे
मुझे बूढ़ा होने नहीं देते
सभी दूर हैं मुझसे
कोई नहीं है आस-पास।
पर सभी जुड़े हैं एक दूसरे से
मोतियों की माला की तरह पास- पास ।

कभी दु:खी होता हूँ
अकेले होने पर
पर अकेले होने नहीं देते
रोना चाहता हूँ
पर रोने नहीं देते
मेरे दोस्त
मुझे बूढ़ा होने नहीं देते ।

अपने तो समझते नहीं
बिछड़ने पर रोते हैं बच्चों की तरह
समझते हैं एक दूसरे को
समझाते हैं समझदारों की तरह
कहते हैं उस समय समझा नहीं
इसलिए बात करते हैं लड़कपन की
दिल की बात बेफिक्री से
कहते हैं
बेवजह की वह मुलाकात
रात में सोने नहीं देते
मेरे दोस्त मुझे बूढ़ा होने नहीं देते।

मिलने पर आज भी
गुदगुदाते हैं बच्चों की तरह
संग-संग मुस्कुराते हैं
वेबजह की बात पर भी
वे ठहाका लगाते हैं
आँसुओं से पलकें भींगने नहीं देते
पलकों से आँसू गिरने नहीं देते
कहते हैं बहुत कीमती है
मोती से भी अधिक
मेरे दोस्त मुझे बूढ़ा होने नहीं देते।

बचना यदि चाहूँ भी इनसे
अनजान अगर बनकर
करोड़ों की भीड़ में तलाश लेते हैं मुझे
अब नियति ऐसी हो गई है
हर पल इनके साथ होना चाहता हूँ
भीड़ में नहीं खोना चाहता हूँ
बेशकीमती यादें संजोना चाहता हूँ
अपने दोस्तों के संग जीना चाहता हूँ,
अपने दोस्तों के संग जीना चाहता हूँ ।।

Sanjay Kumar

DEO Arariya

करवा चौथ

सुख, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त यह करवा-चौथ त्यौहार है,

दांपत्य के मधुर प्रेम का, प्रेम पूर्वक उपहार है।

गणेश, गौरी का पूजन करके, रजनीपति को ध्यायें हम,

विघ्नहर्ता को शीश झुकाकर सुख-सौभाग्य पाएँ हम,

हर जन्म का साथ हो अपना, खिले कमल-सा जीवन हो,

घर-आँगन हो खिला-खिला सा, जीवन अपना मधुवन हो।

शिव-शक्ति सा अटूट प्रेम, माधुर्य प्रेम का आधार है।

सुख, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त यह करवा चौथ त्यौहार है।

चंद्रमा की शीतलता में, दूधिया धवल प्रकाश है,

एक दूजे में विश्वास का, हर-एक-पल आभास है,

सुंदर नैसर्गिक अनुभूति को, आओ मिलकर बाँटें हम,

अंतर्मन की जो दूरी है, दोनों मिलकर पाटें हम।

भावनाओं की कोमलता में, सुमधुर-भाव संचार है।

सुख, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त यह करवा चौथ त्यौहार है।

करवा के सत्प्रयास से फिर, अमर हुआ सुहाग है,

त्याग, तपस्या के कारण ही पुन:, पुष्पित हुआ अनुराग है

पतिव्रता की अनगिन कथाएँ, सुसंस्कृति की थाती है,

सावित्री, सीता सम नारी पातिव्रत्य धर्म निभाती है।

महिमामयी इन नारियों का, श्रद्धापूर्ण आभार है।

सुख, समृद्धि, सौभाग्ययुक्त यह करवा चौथ त्यौहार है।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

अनोखा व्रत करवा चौथ

करवा चौथ का व्रत,
हर वर्ष में एक बार आता है ।
सुखद स्मृतियों के सुभग तान से,
यह जीवन धन्य कर जाता है।

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में ,
चतुर्थी दिन यह व्रत मनाई जाती है।
पति -पत्नी की सुखद सामंजस्य की,
इस दिन नई गाथा भी गायी जाती है।

पत्नी करती व्रत पति के लिए,
वह मंगल कामना करती है।
पति की आयु लंबी हो,
उपवास भी वह दिनभर रखती है।

सुख, समृद्धि, सौभाग्य का द्योतक ,
यह व्रत भारत की अति निराली है।
निशा में चंद्रोदय होने पर ही ,
चलनी से पत्नी चंद्र दर्शन करती है।

इस व्रत का समापन,
चंद्र उदय से होता है।
पतिदेव के कल्याण की चाह लिए ,
इस व्रत का अनुष्ठान पूरा होता है।

यह अनोखा व्रत है भारत का,
जिसमें संस्कृति, सभ्यता का वास है।
घर घर में पत्नी यह व्रत है करती,
यही पत्नी के दिल का सही उजास है।

पति-पत्नी के मिलने से ही,
परिवार का स्वरूप बनता है।
पति -पत्नी हों सदा एक दूजे के,
मन में सदा आस यही रहता है।

इस अवसर पर पत्नियों को,
पतिदेव का भी साथ मिले।
जीवन की यह खूबसूरत बगिया ,
नित दिन यह हिले मिले।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा , जिला- मुजफ्फरपुर

भावना बालमन की

दादी हैं खुशियों के खजाने ,
दूध , मलाई देती हैं।
हम हैं उनके पोता, पोती,
हमें गोदी में उठा लेती हैं।

मम्मी का जब गुस्सा आता,
दादी ही हमें बचाती है।
उनके जैसा और कोई कहाँ,
पढ़ने को भी नित सिखलाती हैं।

पापा जब भी हमें डाँट लगाते ,
दादी उन्हें समझाती हैं।
उनका कहना सब हैं मानते,
वे सबको अच्छी राह दिखलाती हैं।

उनसे हम सब जिद्द जब करते ,
वे कहानी भी सुनाती हैं।
कभी चाँद कभी सूरज की बातें ,
बड़े प्यार से हम सबको बतलाती हैं।

पृथ्वी भी एक ग्रह है ,
यह दादी ने हमें बतलाया है।
और भी अंतरिक्ष में ग्रह, तारे हैं,
यह दादी ने ही समझाया है।

पृथ्वी, सूर्य के चारों ओर चक्कर,
वर्ष में एक बार लगाती है।
इसमें तीन सौ पैंसठ दिन लगते,
यही एक वर्ष बन जाती है।

पृथ्वी भी चौबीस घंटे में ,
अपने अक्ष पर एक बार घूम जाती है।
दादी समझाती इसी बात को,
यही एक दिन-रात बन जाती है।

उनके सब बातों के कहने के,
अंदाज निराले होते हैं।
वे बातें करतीं बड़े प्रेम से,
हर दिल में उजाले होते हैं।

वे हम सबसे प्यार हैं करतीं,
जिंदगी के अनमोल किस्से भी सुनाती हैं।
भविष्य में नित आगे बढ़ने की,
सदा गुर भी हमें सिखलाती हैं।

ऐसी प्यारी दादी का नित दिन ,
हम सब मिलकर गुणगान करें।
उनकी कृपा से ही बहुत कुछ सीखते ,
हम सब उनके पूरे अरमान करें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा जिला- मुज़फ्फरपुर

दादी का हलवा

अम्मा हलवा बना दो न।

दादी को खिला दो न।।

देखो शाम हो आई है।

दादी को भूख सतायी है।।

दादी को है दाँत नहीं।

रोटी चबा पाई नहीं ।।

हलवा खाना है आसान।

बनता जब आते मेहमान।।

अम्मा मेरी बात सुनो न।

घी में सूजी को भूनो न।।

दादी को मन भाती है।

अम्मा क्यों न बनाती है।।

चली बनाने अम्मा हलवा।

दिखने लगा प्रमा का जलवा।।

दादी के गले लगकर बोली।

शहद घोलती कानों में बोली।।

हम दोनों खुब मजे से खाएँ।

अम्मा यह समझ न पाएँ।।

मेरा मन था खाने का।

अभी हलवा बनवाने का।।

खा हलवा अब बाहर जाऊँ।

खेल-कूद फिर वापस आऊँ।।

अम्मा को बतलाओ न।

मुझको गले लगाओ न।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

तितली रानी

तितली रानी! तितली रानी!

लगती हो तुम बड़ी सयानी।।

रख लो तुम आँखों में पानी,

नहीं करो अब तुम मनमानी।।

रंग-बिरंगे पंख सलोने,

मन को अति प्यारे लगते हैं।

फूलों पर जब तुम मँडराती,

सुंदर छवि मनहर भरते हैं।।

बैठ सुमन जब पर फैलाती,

मन को अति मोहक लगती है।

रस फूलों का चूस-चूसकर,

फिर वह, इठलाती फिरती है।

तितली मेरे घर पर आओ,

मन के आँगन में बस जाओ।

सौम्य सुमन मैं बाग सजाऊँ।

प्रीति भाव से तुझे बुलाऊँ।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'

मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

प्यासा कौवा

भीषण गर्मी का एक दिन था
सूरज चमक रहा था सिर पर।
गर्म हवा के झोंकों को,
झाँक रही धरती फट-फट कर।।

तभी पेड़ों की एक शाखा पर
कौवा उड़ता-उड़ता आया।
बीती सुबह, आई दोपहर
खाना तलाश न वह कर पाया।।

चिलचिलाती दोपहरी थी
कौवे को लग गई थी प्यास।
बूँद-बूँद पानी की खातिर,
करने लगा वह प्रयास।।

धरती ऊपर उड़ता-उड़ता
कहाँ-कहाँ नहीं वह भागा।
थक हार गया वह पंछी
तभी घड़ा देखकर जागा।।

घड़ा देख नीचे वह आया
पास आकर निज चोंच लगाया।
घड़ा में इतना कम था पानी
चोंच पानी तक पहुंच न पाया।।

प्रसन्न हुआ अति प्यासा कौवा
देखा, बिखड़े पड़े जो कंकड़।
एक-एक को उसने उठाकर
घड़ा में डालने लगा निरंतर।।

कंकड़ गए पानी के अंदर
पानी और थोड़ा ऊपर आया।
थका हुआ कौवा था प्यासा
पर वह बल पूरजोर लगाया।।

कंकड़ पर कंकड़ रख उसने
लेकर आया वहाँ तक पानी।
चोंच बढ़ाकर पानी छू गया
प्यास बुझाई पीकर पानी।।

प्रयासों के बीज से
फल मिलता अनमोल।
कड़ी मेहनत के बल से
बच्चे! अपनी किस्मत खोल।।

रामपाल प्रसाद सिंह
मध्य विद्यालय दरबे भदौर पंडारक, पटना

हृदय का कूप माँ

माँ! केवल माँ नहीं है वो,

घर का दीया है,

दीये की बाती है,

चूल्हे की आग है,

तवे की रोटी है,

घर का द्वार है,

द्वार की चौखट है,

मंदिर की देवी है,

देवी का प्रसाद है,

मंदिर की धूप है,

विशाल हृदय का कूप है,

प्रसाद का आचमन है,

आचमन का गंगा जल है,

घर का आँगन है,

आँगन की तुलसी है,

तुलसी का संकल्प है,

तुझ-सा न कोई विकल्प है,

आँचल की छाँव है।

अरमानों का पंख है,

भूखे की भूख है,

प्यासे की प्यास है,

मिठाई की मिठास है,

ईश्वर होने का विश्वास है तू

तेरे बारे में माँ मैं और क्या लिखूँ?

जुड़ते नयन की आस है।

मेरी साँसों में बसी साँस है तुम

मेरे जीवन का हर क्षण है तुम

तेरे संस्कारो की थाती का पण हूँ मैं

अवनीश कुमार

व्याख्याता, बिहार शिक्षा सेवा

अदृश्य जीवन चालक

कोई तो चलानेवाला होता है
यह जीवन क्या है ?
जहाँ संवेदनाओं के तार जुड़ते हैं,
अपने कहाने वाले भी मुड़ते हैं।
मनुष्य कभी अपनों से घिरा होता है,
कभी परायों से मिला होता है,
कभी परिस्थितियों का मारा होता है।
सुख- दुःख की छाँव में,
जीवन के दीये जलते हैं।
कभी अपने लिए,
कभी दूसरों के लिए।
लोग सपने संजोते हैं,
किसी के सपने पूरे होते हैं,
किसी के अधूरे ही रह जाते हैं।
कभी कर्म का फंदा गले अटकता है,
तो कभी दुर्भाग्य सामने खड़ा होता है।

जीवन तो सुख-दुःख रूपी पहिया है,
जो सदैव ऊपर-नीचे होता ही रहता है।
कभी-कभी सफर इतना आसान नहीं,
जितना दीखता है।
न चाहते हुए भी,
दिल के इतर समझौते करने पड़ते हैं।
कभी घूँट-घूँट कर जीना पड़ता है,
तो कभी दुःख दर्द में भी हँसना पड़ता है।
यहाँ अपनी मर्जी से कोई नहीं चलता,
कोई तो चलानेवाला होता है।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

अभियान गीत

छोटे बड़े का भेद रहे न, हम सबको गले लगाएँगे।
बच्चे बूढ़े जवान साथ में, हम शिक्षित सबको बनाएँगे।।

रहे नहीं उदास कोई भी, हम सबको हँसी सिखाएँगे।
रहे न किसी से शिकवा गिला, हम ऐसा जहाँ बनाएँगे।।

मैं का अब नहीं होगा भान, हम सबको हीं अपनाएँगे।
रेगिस्तान बने हर दिल में, हम प्रेम पुष्प खिलाएँगे।।

छोटे बड़े का भेद रहे न————-।

तेरा-मेरा भाव न होगा, हम सब ऐसे मिल जाएँगे।
जहाँ पड़ेंगे कदम किसी के, हम अपनी पलक बिछाएँगे।।

हो चुके निष्प्राण यहाँ जो, हम जीना उसे सिखाएँगे।
काम क्रोध मद लोभ रहे न, चैतन्य सोच हम लाएँगे।।

छोटे बड़े का भेद रहे न————-।

स्वर्ग से सुन्दर मातृभूमि, लगन से अपने बनाएँगे।
राम कृष्ण अरिहंत बुद्ध की, हम फिर से झलक दिखाएँगे।

राग-द्वेष का भय न होगा, प्रेम पँखुरी खिल जाएँगे।
चकित रहेगा देख विश्व भी, हम ऐसा देश बनाएँगे।।

छोटे बड़े का भेद रहे न————-।

बोली से अमृत बरसेगा, हम भाषा वही सिखाएँगे।
सींचेंगे प्रेम जल इतना, शूल भी पुष्प बन जाएँगे।।

चहक उठेगी सभी दिशाएँ, कण-कण यहाँ मुस्कराएँगे।
मिट जाएगा भ्रम सभी का, पाठक वह पाठ पढ़ाएँगे।।

छोटे बड़े का भेद रहे न————-।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

विधाता छंद

दरस देतीं प्रथम माता,
कहाँ हो तुम चली आतीं।
क्षुधा प्यासा ललन बैठा,
पके दाना तुम्हीं लातीं।
दया कर के परोसीं वो,
मिटी जो भूख खाने से।
कसम से आज सब भूला,
तुम्हारा प्यार पाने से।
न डरना तुम जमाने से,
यही बातें सिखाई है।
अँधेरे पार जाना है,
उजाले को बुलाई है।
व्यथा अपनी सुनाया मैं,
नयनजल की बही धारा।।

लगी है नेह माता से,
दिखे हैं भोर का तारा।
असल में यूँ बदल जाये,
अधूरी रात का सपना।
करेगा कर्म तुम बेटा,
समर्पण भाव से अपना।
भरोसा तुम नहीं तोड़ो,
सुनो संदेश तू मेरा।
खुली काया तुम्हीं पाया,
यही आँचल तुम्हें घेरा।

एस. के. पूनम
प्रा. वि. बेलदारी टोला, फुलवारीशरीफ

दोहावली

प्रात काल वो सूर्य को, करती प्रथम प्रणाम।
सूर्य देव आशीष दें, रहे सुहाग ललाम।।
प्रातकाल से है लगी, सजा रही है थाल।
अमर सुहाग सदा रहे,सुना रही है नाल।।
काया सुभग सजा रही, सजा रही है बाल।
हाथों में है चूड़ियाँ, प्रदीप सुंदर भाल।।
गगन तारें चमक रहे, चमक रहा राकेश।
वैसे ही परिवार को, प्रभु मत देना क्लेश।।
दीपक जलते ही रहे, हो काली जब रात।
कैसा करवा चौथ है, चमक रहे हैं गात।।
एक हाथ चलनी लिए, दूजी में ले थाल।
हँसता चँद्रमा देखती, होगी आज निहाल।।

रामपाल प्रसाद सिंह

भदौर पंडारक पटना, बिहार

मानव है वही जो

मानव है वही जो ,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में,
जो शराफत से पेश आए।।

खतरे बहुत अधिक हैं,
मुश्किलें राहों में पड़ी हैं।
कहीं इसमें खो न जाना ,
चलना सँभल-सँभल के।
जो जीवन में रास्ता दिखाए ,
सच में तेरे वही काम आए।

मानव है वही जो,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में,
जो शराफत से पेश आए।।

मुश्किलों पर मुश्किलें हों भारी,
तब भी सब्र से काम लेना।
किसी से वादा जो करना,
उसे करके भी निभाना।
कुछ जतन अच्छा कर ले ,
यह तुम्हारे काम आए।

मानव है वही जो,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में,
जो शराफत से पेश आए।।

तेरा बुलंद हों जमाना,
या तेरे गर्दिश भरे सितारे।
साथी बनाया जिसको,
कभी उसे न भूल जाना।
तुम याद रखो उन्हें भी,
जो तुम्हारे वक्त काम आए।

मानव है वही जो,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में ,
जो शराफत से पेश आए।।

सब रह जाएँगे यहीं पर,
यहाँ से कुछ न ले जा सकोगे,
जब टिकट कट जाएगी यहाँ से,
न यहाँ एक क्षण रुक सकोगे।
इस जन्म का मतलब समझो,
जो तेरे जीवन के काम आए।

मानव है वही जो,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में,
जो शराफत से पेश आए।।

कभी न पालो तुम गुरुर मन में,
न कहीं यह इंसान का धरम है।
जीवन मिला तुम्हें जब,
दिल परोपकार में लगाओ।
जीवन सच्चा है उसी का,
जो हर दिल अजीज भाए।

मानव है वही जो,
मानव के काम आए।
इंसानियत उसी में,
जो शराफत से पेश आए।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

स्लेट है तेरा भविष्य

यह स्लेट है तेरा भविष्य,
तेरे संग है किसी का असीस।
लग रहा है तुम अबोध नहीं,
उन रेखाओं का तुझे बोध नहीं।
एक गतिविधि में है तुम लीन,
तुझ में ऊर्जा है अंतहीन।
तेरे आसपास कोई है क्या?
तुम निज भविष्य में है खोया।
डोर लगन की तुम हो पकड़े,
देखा कभी नहीं करते झगड़े।
सब शोर मचाते हैं बच्चे,
पर तुमसे नहीं कोई अच्छे।
जब राह सही पकड़ाता है,
पर्वत छोटा बन जाता है।

है तो नहीं मेरा बालक,
मैं हूँ नहीं तेरा चालक।
फिर भी तुझसे मैं प्यार करूँ,
चर्चा तेरी सौ बार करूँ।
तुम भूल गया होगा मुझको,
कभी भूलूँगा क्या मैं तुझको।
तुम छोड़ अचानक भाग गया,
असह्य दर्द से दाग गया।
क्या आशा रखूँ, आएगा,
या जीवन भर तड़पाएगा।

रामपाल प्रसाद सिंह

भदौर पंडारक पटना, बिहार

दीप जलाएँ

मिलकर ऐसे दीप सजाएँ,
हर कोने के तम को हर लें।
सब मिलकर ऐसे दीप जलाएँ,
हर खुशियों को हम भर-भर लें।।

वर्ष बाद फिर आई दिवाली,
अपने खुशियों को हम खूब बटाएँ।
एक साल से पड़ी गंदगी को,
सब मिल अति शीघ्र हटाएँ।।

कार्तिक अमावस के दिन,
यह घोर अंधेरा हरती।
जीवन में खुशियाँ लाती हैं,
यह जीवन धन्य भी करती।।

साल भर से हुई प्रतीक्षा,
आज वह शुभ दिन है आया।
धरती से आकाश चमन तक,
प्रकाश ही प्रकाश फैलाया।।

खेलें कूदें मस्ती में हम,
घर से बाहर पटाखा चलाएँ।
प्रदूषण वाले पटाखे से,
हम निश्चित दूरी बनाएँ।।

हम बच्चों के लिए खास दिन,
शुभ है कितना आया।
मन में कितनी खुशी है हमको ,
आज घर- घर द्वार सजाया।।

इस पावन प्रकाश पर्व की,
मकसद को हम जानें।
इसके पीछे तर्क हैं कितने,
हम भी कुछ पहचानें।।

इस दिन लक्ष्मी का पूजन होता,
घर आँगन सब सज जाता।
आज सफाई का महत्त्व अधिक है,
यह जीवन धन्य कर जाता।।

लक्ष्मी जी को भाती है,
सब जगह की साफ सफाई।
वहीं जाती हैं लक्ष्मी जी,
जिस घर आँगन होती चिकनाई।।

भगवान राम अयोध्या जब लौटे,
अयोध्या वासी ने घर द्वार सजाया।
उनके स्वागत में सबने,
घर- घर मंगल दीप जलाया।।

हम सब मिलकर नाचें गाएँ,
सब खुशियों से भर जाएँ।
धरती से नील गगन तक,
सब मिल नव दीप जलाएँ।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

दिवाली आज मनाएँगे

दादा जी फुलझड़ी चाहिए,
जगमग वाली लड़ी चाहिए,
हम भी दीप जलाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।
देखो पटाखे फूट रहे हैं,
लगता तारे टूट रहे हैं,
रंगोली भी तो बनाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।

माँ लक्ष्मी की पूजा होगी,
विविध मिठाई भोग लगेगी,
जयकारा भी तो लगाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।
देखो मुनिया चहक रही है,
नये कपड़े में थिरक रही है,
कपड़ा हम भी दिखलाएँगे,
अम्मा तो पकवान बनाकर,
खुश होती सबको खिलाकर,
हम भी पकवान अब खाएँगे ,
दिवाली आज मनाएँगे।
पापा से पैसा दिलवा दो,
कागज कुछ रंगीन मँगवा दो,
घरौंदा भी तो सजाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।

दादा जी एक बात बताओ,
दिवाली की कथा सुनाओ,
महिमा राम की गाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।
हर कोने में दीप जलाकर,
मन के गंदे भाव मिटाकर,
चहुँओर रौशनी फैलाएँगे,
दिवाली आज मनाएँगे।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

सूरज बाबा

सूरज बाबा, ओ सूरज बाबा,
तुमसे रोशन है जग सारा।
सुबह-सवेरे तुम मुस्काओ,
धरती को तुम खूब सजाओ।

सूरज बाबा निकले सुबह,
लेकर अपनी रथ की किरण।
सारा जग करता उजियारा,
धरती का हर एक कण।

सूरज बाबा तुम हो प्यारे,
हमको दिखते तेज तुम्हारे।
तुमसे सीखें मेहनत करना,
रोशनी से है दुनिया भरना।

सोने जैसा रंग तुम्हारा,
दिन भर रौशनी का सहारा।
तुमसे खेतों में हरियाली,
फूलों में मस्ती और लाली।

सूरज बाबा, ओ प्यारे सूरज,
तुम हो सबके राज दुलारा।
दिन ढलते ही छुप जाते हो,
चाँद-सितारे फिर आते हो।

सुबह जब फिर से आना तुम,
नए उजाले दिखाना तुम।
सूरज बाबा, ओ सूरज बाबा,
तुमसे रोशन है जग सारा।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया, बिहार

उम्मीद के दीए

नित मन की अमराईयों में,
मन की बातें बोलती हैं,
नीरस से सरस जीवन के,
मिश्रित पीयूष रस घोलती हैं।

समय बीत रहा है पल-पल,
कह रहा है, हों सब प्रतिबद्ध,
उम्मीद के दीए जला ऐ पथिक,
मन, मनदीप के द्वार खोलती है।

हो न कभी तू अविचल,
मन कह रहा है अविकल हो चल,
विपदा काल मिटेगा एक दिन,
तन-मन हर्षित हो मुस्काती है।

खिलेंगे, चहकेंगे और दमकेंगे,
कर्ण सुनेंगे, ज्ञान मस्तक चूमेंगे,
भले दूरियाँ हैं यह पल छिन,
शिक्षालय के ज्ञान गीत गाती है।

आशा ही जीवन है, जीवन की आशा है,
ये समय विपदा जाएगी एक दिन,
शिक्षा मंदिर के कोंपल किसलय बोल,
स्वर लहरी बन बंद द्वार खोलती है।

नित मन की अमराईयों में,
मन की बातें बोलती हैं,
नीरस से सरस जीवन के,
मिश्रित पीयूष रस घोलती हैं।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

पावन शरद ऋतु

पावन शरद ऋतु की बहुत बड़ाई ,
सबके चित्त नित परम सुहाई ।

आश्विन, कार्तिक होते अति पावन,
दिल को लगते हैं अति भावन।

पर्वों का यह पवित्र महीना,
नित दिन खुशियों से है जीना।

पितृ पक्ष में पिंड दान हैं करते,
लोग पितर का ध्यान हैं धरते।

जितिया पर्व भारी अति भावन,
माता का उपवास अति पावन।

शुक्ल पक्ष में देवी पूजन होता,
इनका पूजन कर कोई नहीं रोता।

दसवें दिन विजयादशमी आती,
सबके दिल उमंग भर जाती।

आश्विन शरद पूर्णिमा होती,
वनस्पतियों के लिए यह अमृत बोती।

करवा चौथ व्रत पत्नी है धरती,
लंबी पति उम्र की कामना करती।

धनतेरस का शुभ दिन आया,
सोना चाँदी का बाजार मन भाया।

कार्तिक अमावस को मने दिवाली,
घर- घर दीपों की छटा निराली।

इस दिन लक्ष्मी की पूजा निशा में होती,
निशा सर्वत्र अंधकार है खोती।

भैया दूज का पावन दिन भाया,
भैया बहना का प्रेम उमड़ आया।

चित्रगुप्त पूजा की धूम मची है ,
हर नयनों में भक्ति रची है।

छठ व्रत का महापर्व आया ,
है सबका रोम- रोम हर्षाया।

अक्षय नवमी इस ऋतु में आती,
सबका दिल खुशियों से भर जाती।

देवोत्थान एकादशी इसी में पड़ती,
यह व्रत सदा मंगल है करती।

शरद पूर्णिमा का एक और दिन आया,
इस ऋतु का यह अंतिम दिन भाया।

यह कार्तिक मास पूर्णिमा पावन,
चित्त को लगते बड़े सुहावन।

शरद ऋतु को हृदय बसायें,
परम धन्य यह जीवन पायें।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

दिल में प्यार के दीप जले

इस दिवाली हर तरफ
अमन, शांति के फूल खिले।
नफरत, ईर्ष्या की दीवार ढहे
हर दिल में प्यार के दीप जले।

जगमग हो हर मन का आँगन
उज्ज्वल हो हृदय का प्रांगण।
वैर-भाव पनपने न पाए,
मिले सभी के मन- से- मन।

प्रसन्नता फैले चहुँ ओर
सभी के हृदय से आशीष निकले।
नफरत, ईर्ष्या की दीवार ढहे,
हर दिल में प्यार के दीप जले।

कोई भी प्राणी भूखे न सोये,
अब दूध बिना, कोई बच्चा न रोये।
सबकी थाली में हो अन्न
आओ इस दीवाली लें, हम ये प्रण।

दीन-दुखियों की मदद को,
आओ हम सब, एक साथ चलें।
नफरत, ईर्ष्या की दीवार ढहे,
हर दिल में प्यार के दीप जले।

संजय कुमार

इंटरस्तरीय गणपत सिंह उच्च विद्यालय, कहलगाँव
भागलपुर, बिहार

तमस मिटा चलो दीप जलाएँ

आओ चलो चलें दीप जलाएँ,
काले अँधियारे को दूर भगाएँ,
संग चलें और घुलमिल जाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

मन के मैल को आज मिटाएँ,
नकारात्मकता को परे हटाएँ ,
डर को मन से दूर भगाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

अज्ञानता से ज्ञान की ओर,
खुशबू फैलाएँ चहुँओर,
सद्भावना का अलख जगाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

बुराई से लड़ें, अच्छाई पर चलें,
असत्य से हटें, सत्य संग पलें,
ईर्ष्या, द्वेष घृणा सब भुलाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

कर साहस और प्रतिकार,
तेज करें सब कौशल धार,
हर तरफ खुशियाँ फैलाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

भक्त प्रह्लाद की पावन पुकार,
सुनकर लिए, नरसिंह अवतार,
अवतरित हो पापी पर कहर बरपाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

होलिका, हिरण्यकश्यप का हुआ सर्वनाश,
पाप का हुआ नाश, पुण्य बना खास,
जीवन में इस सबक को अपनाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।।

हर घर सब मिलकर दीप जलाएँ,
दरिद्रता भगाएँ, लक्ष्मी जी बुलाएँ,
अज्ञानता जाए, सरस्वती जी आएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

स्व मन में एक दीप जलाएँ,
घर संग, मन रौशन कर जाएँ,
स्वच्छ परिवेश रख दिवाली मनाएँ,
तमस मिटा, चलो दीप जलाएँ।

विवेक कुमार

भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

आओ सब मिल दीप जलाएँ

आओ सब मिल दीप जलाएँ
नाचें- गाएँ खुशी मनाएँ।
मन के भीतर का अँधियारा,
भव भय भ्रम सब दूर भगाएँ।।
आओ सब मिल दीप जलाएँ।

झिलमिल-झिलमिल दीपक भाते
गेह-द्वार आँगन सज जाते।
महालक्ष्मी को घर बुलाने,
रंक- धनी सब मंगल गाते।।
इस उत्सव की शुभ बेला में,
हम उजियारा से नहलाएँ।
आओ सब मिल दीप जलाएँ।

हर तरफ उल्लास है दिखता
कहीं पटाखें, बम है फटता।
जहाँ अकिंचन, घोर तिमिर था
दीन कुटिज दीपों से सजता।।
तरह-तरह के ज्योतिपुंज से,
जन-जन में खुशियाँ छा जाएँ
आओ सब मिल दीप जलाएँ।

जो हैं सोए, उसे जगाएँ
कर्म पथ बढ़ मंजिल पाएँ।
अंधकार से जुझे यह जीवन
इस दिन ऐसा प्रण दुहराएँ।।
विश्व शांति के नव विहान में,
बुझती लौ फिर से धधकाएँ।।
आओ सब मिल दीप जलाएँ।

संजीव प्रियदर्शी
फिलिप उच्च वि० बरियारपुर, मुंगेर

दीपोत्सव हमें मनाना है

हर तरफ घोर अँधियारा है, एक दीप हमें जलाना है।
आज रात दिवाली की, दीपोत्सव हमें मनाना है।
घर का कोना साफ हो गया, दीपों से इसे सजाना है।
घर आँगन रंगोली भरकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
शरद ऋतु शैशव हुआ, कार्तिक माह सलोना है।
साफ सफाई संपन्न हुआ, दीपोत्सव हमें मनाना है।
घनी अंधेरी रात अमावस, प्रकाश चतुर्दिक फैलाना है।
कर लक्ष्मी गणेश का पूजन, दीपोत्सव हमें मनाना है।
जगमगाती लड़ियाँ लगाकर, छत से इसे लटकाना है।
दरवाजे पर बंदनवार बनाकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
बच्चे छोड़ेंगे फुलझडियाँ और संग हमें मुस्काना है।
सबको खुशियाँ बाँट बाँटकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
बाहर रौशन हो गई दुनिया, मन में उजास अब लाना है।
कर ईर्ष्या घृणा का परित्याग, दीपोत्सव हमें मनाना है।

यह पर्व प्रतीक पूर्णता का, वैचारिक पूर्णता हमें लाना है।
समदर्शी भाव जगाकर खुद में, दीपोत्सव हमें मनाना है।
रिश्ते नाते जैसे अब तो, लगता कोई खिलौना है।
सब रिश्तों की अहमियत बताकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
प्रेम समर्पण विश्वास रहा न, बस स्वार्थ का रोना है।
उनको स्वार्थ की सीमा बताकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
पर पीड़ा से दुखी न होते, दिखावे में नैन भिंगोना है।
पीड़ा का अब मर्म सिखाकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।
इस पर्व के नायक श्री राम, उनकी महिमा गाना है।
राम के हीं आदर्श अपनाकर, दीपोत्सव हमें मनाना है।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

एक दीप इनके नाम

आइए, जलाते हैं एक दीप
अपने माता-पिता की
लम्बी आयु के लिए,
जिन्होंने हम सबको
सुंदर संस्कार दिए।
आइए, जलाते हैं एक दीप
अपने गुरुजनों के लिए,
जो अच्छी शिक्षा देकर
भले- बुरे का आभास कराते
हैं।
जीवन में प्रकाश दिखाते हैं।
आइए, जलाते हैं एक दीप
किसानों के लिए
जो कड़ाके की ठंड,
भीषण चिलचिलाती धूप,
और मूसलाधार बारिश में
अपने शरीर का तर्पण कर
हमारे लिए अन्न पैदा करते हैं।
आइए, जलाते हैं एक दीप
उन मजदूरों के लिए,
जो घुटन-भरा जीवन जी कर,
हमारे लिए मकान और वस्त्र
बनाते हैं
हमारे घर से कवाड़ ले जाते हैं,
घर की रंगाई-पुताई करते हैं
घर सजाने के लिए मूर्ति बनाते हैं
घरों में जलाने के लिए दीप बनाते हैं।
आइए, जलाते हैं एक दीप
अपने दोस्तों के लिए ,
जो हमारे जीवन को
रंगीन बनाए रखते हैं
सुख-दुःख में हमारे साथ रहते हैं
आइए, जलाते हैं एक दीप
उन जवानों के लिए,
जो सरहदों पर मुस्तैद रहकर
हमें निश्चिंतता भरी जिंदगी और
घर में परिवार के साथ-साथ, सुरक्षित रहकर
पर्व-त्योहार मनाने का अवसर देते हैं।
आइए, जलाते हैं एक दीप
उन सभी लोगों के लिए
जिनका हमारे जीवन को
बेहतर बनाने में,
कोई न कोई योगदान रहता है।।।

Sanjay Kumar

DEO Arariya

जरा रौशनी फैला दें

जीवन मिला हमें जब ,
जरा रौशनी फैला दें ।
दूसरों के दर्द को भी ,
अपने दर्द में मिला लें।।
दीपों की रौशनी में,
हम अपना दुःख भुला दें।
कोई न हमारा दुश्मन,
सबको गले लगा लें।।
जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी,
अपने दर्द में मिला लें।।
रिश्तों को हम निभायें,
फरिश्ते भी याद कर लें ।
दिल में मातृभूमि बसाकर,
अपनी मिट्टी से प्यार कर लें।।

जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी,
अपने दर्द में मिला लें।।
तन के साथ मन में ,
जीवन की ज्योति जला लें।
अधिकार संग कर्त्तव्य को
भी अपने गले लगा लें।।
जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी ,
अपने दर्द में मिला लें।।
जीना उसी का है जीना,
औरों को भी काम दे दे।
रोते हुए भी जन को,
हँसना हम सीखा दें।।

जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी,
अपने दर्द में मिला लें।।
यह तन किसी का नहीं है,
हम मन से न हार मानें।
जीवन दिया प्रभु जब,
इंसानियत को जानें।।
जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी,
अपने दर्द में मिला लें।।
कुछ तो ऐसा कर लें,
जो धर्म को गले लगा ले।
दीपों की रोशनी में,
हर पल जगमगा लें।।
जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी ,
अपने दर्द में मिला लें।।
इस माटी के दीए से,
संदेश फिर से ले लें।
कोई जब हमें पुकारे,
दिल अपना बड़ा कर लें।।
जीवन मिला हमें जब,
जरा रौशनी फैला दें।
दूसरों के दर्द को भी,
अपने दर्द में मिला लें।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

दीप जलाओ रे

दीप जलाओ रे!
दीप जलाओ रे!
ढोलक बजाओ रे !
गीत कोई गाओ रे !
शुभता, मंगल का,
गीत गुनगुनाओ रे !
दीप जलाओ रे !
दीप जलाओ रे !
दीये की लड़ियों से,
घर- द्वार सजाओ रे!
अमावस की रात्रि
अंधेरा मिटाओ रे !
दीप जलाओ रे!
दीप जलाओ रे !
मिट्टी का सुंदर,
घरौंदा बनाओ रे !
पटाखे फुलझडियों से
द्वार जगमगाओ रे !
दीप जलाओ रे!
दीप जलाओ रे !
झिलमिल दीये की,
रोशनी में नहाओ रे!
भेद भुलाओ रे !
खुशियाँ मनाओ रे!

दीप जलाओ रे!
दीप जलाओ रे !
लक्ष्मी पूजन कर ,
आँगन महकाओ रे
लड्डू बताशे का
भोग लगाओ रे !
दीप जलाओ रे !
दीप जलाओ रे!
लंका विजय का
राम आगमन का
रीत निभाओ रे!
उत्सव मनाओ रे!
दीप जलाओ रे!
दीप जलाओ रे!
पुआ -पकवानों ,
मेवा -मिष्ठानों को
छककर खाओ रे !
दीप जलाओ रे !
दीप जलाओ रे!

प्रियंका कुमारी

उ. म. वि. बुढ़ी
कुचायकोट, गोपालगंज, बिहार

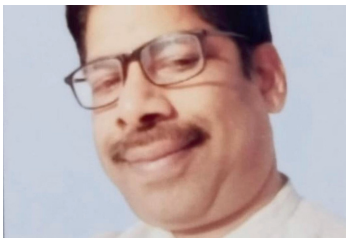

दोहावली

पर्व दिवाली ज्योति का,
करता तम का अंत।
खुशियाँ बाँटें मिल सभी,
कहते सब मुनि संत।
कहती दीपों की अवलि, दूर करें अँधियार।
दुख दीनों का दूर कर, लाएँ नव उजियार।।
सत शिव सुंदर भाव रख, पर्व मनाएँ आज।
देकर खुशियाँ दीन को, मान बढ़ाएँ काज।।
दीप जलें जब द्वार पर,
खुशियाँ मिलें हजार।
गृह ज्योतित जब दीन के,
खुशियाँ तभी अपार।।
प्रेम-मिठाई बाँटिए, देख दीप की साज।
सुखद सौम्य व्यवहार से, रचिए स्वस्थ समाज।।
जीवन का उल्लास है, उत्सव का ही नाम।
रखें स्वच्छ पर्यावरण, करके मन अभिराम।।
।

लक्ष्मी माँ का आगमन, लाया हर्ष अपार।
गणपति प्रभु के साथ से, मिटते कष्ट हजार।।
दीपक माटी का सदा, देता सुघर विचार।
हाथ नित्य रचना बढ़े, कर्म विमल साकार।।
दीपक माटी से ढला, लगा नयन अभिराम।
जलना उसका काम है, सुंदर अभिनव-नाम।।
दीप जले जब नेह का, होती खुशी अपार।
द्वार खोल परमार्थ का, करो दीन-उद्धार।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

दीपों ने किया उजाला है

गाँव छोड़ बाहर देखा धरती अंबर काला है।
तब जाना इन दीपों ने, कितना किया उजाला है।।
आज कहाँ बल तम के बाजू में, कुछ भी नहीं निशानी है।
हार-जीत होती आई है, हिंद की राम कहानी है।।
अयोध्या लौटते दीप जले थे,
तभी से फैला उजाला है।
तब जाना इन दीपों ने, कितना किया उजाला है।।
तेरह वर्ष बिताए पांडव, छि-छिप अपना जीवन।
चौदहवें में घर को लौटे, खुशियाली ने की नर्तन।।
घर-घर घी के दीए जलाए,
तभी से उड़े गुलाला है।
तब जाना इन दीपों ने, कितना किया उजाला है।।
विक्रमादित्य के यश बल से, सिंहासन हर्षाए थे।
शत्रु जिनके बल के आगे, बरसों तक थर्राए थे।।
इसी दिन से मनी दिवाली,
आज भी बनी निराला है।
तब जाना इन दीपों ने, कितना किया उजाला है।।
हार-जीत की यही कहानी सदियों से चलती आई।
टूटे मस्जिद मंदिर बन गए, अयोध्या फिर से मुस्काई।।
करोड़ों दीप जलेंगे आज भी,
आज खूब बने गजाला है।
तब जाना इन दीपों ने, कितना किया उजाला है।।

रामपाल प्रसाद सिंह

भदौर पंडारक पटना, बिहार

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010